

# श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन (SKPF) एवं WINCOMPETE- संयुक्त टेस्ट सीरीज - 2026

विषय: भारतीय संविधान -संवैधानिक विकास व सिद्धांत

टेस्ट संख्या: [14]

[ANSWER KEY]

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प | प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---------------|------------|---------------|------------|
| 1             | B          | 11            | B          |
| 2             | C          | 12            | B          |
| 3             | B          | 13            | A          |
| 4             | B          | 14            | B          |
| 5             | C          | 15            | B          |
| 6             | B          | 16            | B          |
| 7             | B          | 17            | B          |
| 8             | A          | 18            | B          |
| 9             | C          | 19            | C          |

|    |   |    |   |
|----|---|----|---|
| 10 | B | 20 | A |
|----|---|----|---|

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प | प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---------------|------------|---------------|------------|
| 21            | A          | 31            | B          |
| 22            | C          | 32            | C          |
| 23            | A          | 33            | A          |
| 24            | B          | 34            | D          |
| 25            | B          | 35            | C          |
| 26            | A          | 36            | B          |
| 27            | C          | 37            | A          |
| 28            | B          | 38            | B          |
| 29            | B          | 39            | C          |
| 30            | A          | 40            | A          |

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प | प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---------------|------------|---------------|------------|
| 41            | B          | 51            | B          |
| 42            | D          | 52            | B          |
| 43            | C          | 53            | B          |
| 44            | B          | 54            | B          |
| 45            | C          | 55            | A          |
| 46            | B          | 56            | C          |
| 47            | C          | 57            | A          |
| 48            | C          | 58            | A          |
| 49            | B          | 59            | B          |
| 50            | B          | 60            | B          |

wincomplete

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प | प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---------------|------------|---------------|------------|
| 61            | B          | 71            | B          |
| 62            | C          | 72            | C          |
| 63            | B          | 73            | A          |
| 64            | B          | 74            | C          |
| 65            | B          | 75            | C          |
| 66            | C          | 76            | B          |
| 67            | B          | 77            | B          |
| 68            | B          | 78            | B          |
| 69            | B          | 79            | D          |
| 70            | B          | 80            | C          |

wincomplete

| प्रश्न संख्या | सही विकल्प | प्रश्न संख्या | सही विकल्प |
|---------------|------------|---------------|------------|
| 81            | B          | 91            | B          |
| 82            | C          | 92            | B          |
| 83            | C          | 93            | B          |
| 84            | B          | 94            | C          |
| 85            | B          | 95            | C          |
| 86            | B          | 96            | C          |
| 87            | A          | 97            | A          |
| 88            | C          | 98            | B          |
| 89            | C          | 99            | C          |
| 90            | A          | 100           | D          |

wincomplete

## विषय: भारतीय संविधान -संवैधानिक विकास व सिद्धांत

### टेस्ट संख्या: [14]

#### विस्तृत उत्तर और व्याख्या

**प्रश्न:1** भारत शासन अधिनियम 1919 के प्रांतीय द्वैध शासन विन्यास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** भारत शासन अधिनियम 1919 के तहत प्रांतों में द्वैध शासन प्रणाली लागू की गई थी। इसके अंतर्गत प्रांतीय कार्यकारी परिषद के सदस्यों को 'आरक्षित' (Reserved) विषयों (जैसे वित्त, कानून-व्यवस्था, भू-राजस्व) का प्रभार सौंपा गया था, जो विधान परिषद के प्रति उत्तरदायी नहीं थे। अतः कथन I तथ्यतः असत्य है। हस्तांतरित विषयों का प्रभार निर्वाचित मंत्रियों को दिया गया था, जिसमें स्थानीय स्वशासन, स्वास्थ्य और शिक्षा शामिल थे। गवर्नर को इन विषयों में मंत्रियों की सलाह को खारिज करने का पूर्ण विवेकाधीन अधिकार प्राप्त था, जिससे मंत्रियों की वास्तविक प्रशासनिक शक्ति अत्यंत सीमित हो गई थी।

**प्रश्न:2** भारत शासन अधिनियम 1919 के बजटीय प्रणालियों और वित्तीय नियंत्रण के संदर्भ में निम्नलिखित अभिकथन और कारण पर विचार कीजिए...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** 1919 के अधिनियम ने पहली बार केंद्रीय और प्रांतीय बजटों को वैधानिक रूप से पृथक किया, जिससे प्रांतीय विधान परिषदों को अपने बजट स्वयं विनिर्मित करने की शक्ति मिली। अतः कथन सत्य है। परंतु कारण सर्वथा असत्य है क्योंकि प्रांतीय सरकारों को विदेशी ऋण बाजार से सीधे या स्वतंत्र रूप से पूंजी उगाहने की कोई संप्रभुता नहीं थी; उनके वित्तीय ऋण विन्यास पूरी तरह से गवर्नर-जनरल और भारत सचिव के विनियामक नियंत्रण और अनुमोदन के अधीन जकड़े हुए थे।

**प्रश्न:3** भारत शासन अधिनियम 1919 के तहत स्थापित द्विसदनीय केंद्रीय विधायिका की विनियामक शक्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों और निष्कर्षों का मूल्यांकन कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 1919 के अधिनियम द्वारा केंद्रीय विधानसभा में 145 सदस्य निर्धारित थे (104 निर्वाचित और 41 मनोनीत)। निष्कर्ष I असत्य है क्योंकि केंद्रीय विधायिका के पास वायसराय की कार्यकारी परिषद पर कोई वास्तविक विधिक नियंत्रण नहीं था और न ही वे अविश्वास प्रस्ताव द्वारा उसे हटा सकते थे। निष्कर्ष II पूरी तरह सत्य है; यदि केंद्रीय विधायिका किसी बजटीय अनुदान को खारिज या कम करती थी, तो गवर्नर-जनरल अपनी विशेष 'प्रमाणीकरण' (Certification) शक्ति द्वारा राष्ट्र की सुरक्षा और हितों के नाम पर उसे स्वतः बहाल कर सकता था।

**प्रश्न:4** ब्रिटिश भारत के विभिन्न शासन अधिनियमों के विनियामक लक्षणों को उनके आधिकारिक मूलाधारों के साथ सुमेलित कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन वैधानिक प्रावधानों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: प्रांतों में द्वैध शासन (Dyarchy) का प्रवर्तन भारत शासन अधिनियम 1919 की प्रांतीय योजना द्वारा किया गया था (a-3)। प्रांतों में उत्तरदायी सरकार और 'प्रांतीय स्वायत्तता' का क्रियान्वयन भारत शासन अधिनियम 1935 के सामान्य विन्यास द्वारा हुआ (b-2)। केंद्र के स्तर पर द्वैध शासन प्रणाली का सांस्थानिक विन्यास 1935 के अधिनियम के केंद्रीय संस्तर में प्रस्तावित था (c-1)। अंततः, अवशिष्ट शक्तियों को किसी विधानमंडल को न देकर गवर्नर-जनरल को सौंपने का विन्यास 1935 के अधिनियम के संघीय विधायी प्रक्रम द्वारा सुनिश्चित किया गया था (d-4)।

**प्रश्न:5** भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत शक्तियों के त्रिविध आनुपातिक विभाजन के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असंगत है?

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C में सांख्यिकीय त्रुटि होने के कारण यह असंगत है। भारत शासन अधिनियम 1935 की समवर्ती सूची (Concurrent List) के अंतर्गत विनियामक रूप से 36 विषयों को प्रख्यापित किया गया था, न कि 42 विषयों को। अन्य सभी कथन विधिक रूप से सत्य हैं: संघ सूची में 59 विषय थे और प्रांतीय सूची में 54 विषय शामिल थे। इसके अतिरिक्त, धारा 104 के अनुसार समवर्ती सूची में विधिक टकराव की स्थिति में सामान्यतः केंद्रीय कानून प्रभावी होता था, परंतु यदि प्रांतीय विलेख को गवर्नर-जनरल या सम्राट की पूर्व सहमति प्राप्त हो, तो वह संबंधित प्रांत में वैध बना रह सकता था।

**प्रश्न:6** "भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत परिकल्पित 'अखिल भारतीय संघ' (All India Federation)..."

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 1935 के अधिनियम की संघीय योजना के विफल होने का प्राथमिक विनियामक कारण यह था कि इसमें शामिल होना ब्रिटिश प्रांतों के लिए तो अनिवार्य था, परंतु देशी रियासतों के लिए पूर्णतः स्वैच्छिक था। रियासतों के राजाओं को यह भय था कि संघ में प्रविष्ट होने से उनके आंतरिक संप्रभु अधिकार और विशेषाधिकार ब्रिटिश भारत के लोकतांत्रिक विन्यासों के प्रभाव से विखंडित हो जाएंगे। अतः उन्होंने 'प्रवेश विलेख' (Instrument of Accession) पर हस्ताक्षर करने से पूर्ण इनकार कर दिया, जिसके कारण अधिनियम का यह संघीय भाग कभी प्रभावी नहीं हो सका।

**प्रश्न:7** भारत शासन अधिनियम 1935 के सांस्थानिक मील के पथरों के अंतर्गत स्थापित 'संघीय न्यायालय'...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 1935 के अधिनियम की धारा 200 के तहत स्थापित संघीय न्यायालय (Federal Court) के पास संघ और प्रांतों के मध्य विधिक विवादों के निपटारे हेतु प्रारंभिक (Original) क्षेत्राधिकार निहित था, अतः कथन B सत्य है। विकल्प A असत्य है क्योंकि यह अंतिम न्यायालय नहीं था; इसके निर्णयों के विरुद्ध प्रिवी काउंसिल (लंदन) में अपील की जा सकती थी। विकल्प C असत्य है क्योंकि इसकी स्थापना 1 अक्टूबर 1937 को नई दिल्ली में की गई थी, न कि कलकत्ता में। विकल्प D असत्य है क्योंकि इसके न्यायाधीशों की सेवानिवृत्ति की आयु सीमा 65 नहीं, बल्कि 62 वर्ष विन्यासित थी।

**प्रश्न:8** भारत शासन अधिनियम 1919 की वैधानिक कमियों और प्रशासनिक विचलनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** 1919 के अधिनियम के विन्यास के तहत वायसराय की कार्यकारी परिषद के 6 कार्यकारी सदस्यों में से 3 सदस्यों का भारतीय होना अनिवार्य था (कमांडर-इन-चीफ को छोड़कर), अतः कथन I सत्य है। कथन II असत्य है क्योंकि सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व का विस्तार करते हुए सिखों, आंग्ल-भारतीयों और भारतीय ईसाइयों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल बनाए गए थे, न कि उन्हें सामान्य सूची में जोड़ा गया था। कथन III असत्य है क्योंकि महिलाओं को सार्वभौमिक मताधिकार नहीं मिला था; केवल कुछ प्रांतों ने संपत्ति के कठोर मापदंडों के आधार पर सीमित महिलाओं को मत का अधिकार दिया था।

**प्रश्न:9** भारत शासन अधिनियम 1935 के वित्तीय विन्यास और भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की स्थापना के राजकोषीय कारणों के संदर्भ में निम्नलिखित अभिकथन और कारण पर विचार कीजिए...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** 1935 के अधिनियम के तहत देश के वित्तीय और मौद्रिक विन्यास को नियंत्रित करने तथा मुद्रा संचलन के प्रबंधन हेतु भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की स्थापना का वैधानिक मार्ग प्रशस्त किया गया (जो 1 अप्रैल 1935 को प्रभावी हुआ)। अतः कथन पूरी तरह सत्य है। परंतु कारण सर्वथा असत्य है क्योंकि ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार भारत के वित्तीय ढांचे पर अपना नियंत्रण छोड़ना नहीं चाहती थी; वरन् वे रिजर्व बैंक को एक गैर-राजनीतिक सांस्थानिक रक्षक बनाकर भारतीय मंत्रियों के बजटीय और विधायी हस्तक्षेप से दूर रखना चाहते थे।

**प्रश्न:10** 1919 के अधिनियम के तहत 'मेस्टन योजना' (Meston Scheme) द्वारा जनित वित्तीय गतिकी के संबंध में निम्नलिखित कथनों और निष्कर्षों का मूल्यांकन कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** वर्ष 1920 में लॉर्ड मेस्टन की अध्यक्षता में गठित समिति ने केंद्र और प्रांतों के बीच राजस्व स्रोतों (जैसे प्रांतों को भू-राजस्व और केंद्र को आयकर) के आवंटन के पश्चात केंद्रीय बजटीय घाटे की भरपाई हेतु प्रांतों पर 'प्रांतीय अंशदान' थोपा। निष्कर्ष I असत्य है क्योंकि इस दमनकारी वित्तीय भार के कारण प्रांतों के पास अपने हस्तांतरित लोक-कल्याणकारी कार्यों (शिक्षा, स्वास्थ्य) हेतु बजट का भारी अभाव हो गया। निष्कर्ष II पूरी तरह सत्य है; इसने प्रांतीय राजकोषीय स्वायत्तता को पंगु बना दिया, जिसके कारण अंततः वर्ष 1927-28 तक इस अंशदान प्रणाली को विधिक रूप से समाप्त करना पड़ा।

**प्रश्न:11** बीसवीं शताब्दी के औपनिवेशिक विधायी विलेखों के अंतर्गत हुए महत्वपूर्ण प्रशासनिक परिवर्तनों को उनके वास्तविक क्रियान्वयन के वर्षों के साथ सुमेलित कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन प्रशासनिक और प्रादेशिक विचलनों का सही विधिक सुमेलन इस प्रकार है: भारत शासन अधिनियम 1935 के प्रावधानों के तहत 1 अप्रैल 1937 को बर्मा को भारत के नक्शे से विधिक रूप से पृथक किया गया (a-3)। ली आयोग की सिफारिशों के आधार पर 1 अक्टूबर 1926 को भारत के पहले केंद्रीय लोक सेवा आयोग (CPSC) की स्थापना की गई (b-2)। भारत शासन अधिनियम 1935 के लागू होने के साथ ही 1937 में प्रांतों से द्वैध शासन प्रणाली का पूर्ण व्यावहारिक उन्मूलन कर दिया गया (c-3)। अंततः, 1919 के अधिनियम के तहत निर्मित प्रांतीय द्वैध शासन का वास्तविक प्रारंभ वर्ष 1921 में हुआ था (d-1)।

**प्रश्न:12** भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत 'प्रांतीय स्वायत्तता' (Provincial Autonomy) के प्रशासनिक लक्षणों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असंगत है?

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** विकल्प B असंगत होने के कारण सही उत्तर है। प्रांतीय स्वायत्तता लागू होने के बावजूद प्रांतीय गवर्नर मंत्रियों की विधिक सलाह मानने हेतु पूरी तरह बाध्य नहीं था। अधिनियम ने गवर्नर को व्यापक 'विवेकाधीन शक्तियाँ' (Discretionary Powers) और 'विशेष उत्तरदायित्व' (Special Responsibilities) प्रदान किए थे, जिनके तहत वह मंत्रियों की सलाह को खारिज कर सकता था, अध्यादेश जारी कर सकता था और प्रांतीय विधायिका द्वारा अस्वीकृत विधेयकों को कानून बना सकता था। अन्य सभी विकल्प (पृथक विधिक इकाई, उत्तरदायी कार्यपालिका और छह प्रांतों में द्विसदनीय व्यवस्था) विधिक रूप से सत्य हैं।

**प्रश्न:13** "1919 के अधिनियम के तहत प्रख्यापित मताधिकार अत्यधिक संकीर्ण था..."

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** 1919 के मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के विन्यास के अंतर्गत मताधिकार के मापदंड इतने कठोर और सीमित रखे गए थे कि तत्कालीन ब्रिटिश भारत की कुल वयस्क जनसांख्यिकी का मात्र **लगभग 3 प्रतिशत** हिस्सा (लगभग 50 लाख से 60 लाख नागरिक) ही मतदाता सूची में विधिक रूप से पंजीकृत हो सका था। इसके विपरीत, जब भारत शासन अधिनियम 1935 लागू हुआ, तो इन मापदंडों में आंशिक ढील दिए जाने से मतदाता जनसांख्यिकी का आयतन बढ़कर कुल जनसंख्या का लगभग 10 प्रतिशत (लगभग 3 करोड़ नागरिक) तक विस्तृत हो सका था।

**प्रश्न:14** भारत शासन अधिनियम 1935 के तहत लोक सेवा आयोगों के बहु-स्तरीय सांस्थानिक ढांचे के विन्यास के संदर्भ में कौन सा एकल विकल्प सत्य प्रतिरूप को प्रदर्शित करता है?

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 1935 के अधिनियम ने त्रि-स्तरीय लोक सेवा आयोग प्रणाली का विन्यास किया। इसके तहत दो या दो से अधिक प्रांतों की साझा प्रशासनिक आवश्यकताओं और भर्ती प्रक्रमों के संचालन हेतु एक 'संयुक्त लोक सेवा आयोग' (Joint Public Service Commission) के गठन का वैधानिक मार्ग प्रशस्त किया गया, अतः विकल्प B सत्य है। विकल्प A असत्य है क्योंकि प्रांतों हेतु पृथक 'प्रांतीय लोक सेवा आयोग' का प्रावधान था। विकल्प C

असत्य है क्योंकि संयुक्त आयोग के सदस्यों की नियुक्ति गवर्नरों द्वारा नहीं, बल्कि ब्रिटिश सम्राट (Crown) द्वारा की जाती थी। विकल्प D असत्य है क्योंकि सदस्यों को हटाने की शक्ति केवल सम्राट के पास सुरक्षित थी।

**प्रश्न:15** भारत शासन अधिनियम 1919 के विधायी नियंत्रण और बजटीय विन्यास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 1919 के अधिनियम के तहत केंद्रीय बजट का एक बहुत बड़ा हिस्सा, जो लगभग 65 प्रतिशत विन्यासित था, 'गैर-मतदान योग्य' (Non-votable) श्रेणी के अंतर्गत संचित निधि पर भारित रखा गया था, अतः कथन I पूरी तरह सत्य है। कथन II असत्य है क्योंकि दोनों सदनों के विधायी गतिरोध को सुलझाने हेतु गवर्नर-जनरल द्वारा 'संयुक्त बैठक' (Joint Sitting) बुलाने का स्पष्ट वैधानिक प्रावधान धारा 67 के तहत विद्यमान था। कथन III असत्य है क्योंकि 1919 के अधिनियम द्वारा पहली बार भारत सचिव के वेतन और भत्तों को भारतीय राजस्व से हटाकर ब्रिटिश राजस्व पर भारित किया गया था।

**प्रश्न:16** भारत शासन अधिनियम 1935 के प्रादेशिक पुनर्गठन और प्रशासनिक भूगोल के संदर्भ में निम्नलिखित अभिकथन और कारण पर विचार कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** भारत शासन अधिनियम 1935 के प्रावधानों के प्रवर्तन के फलस्वरूप वर्ष 1936 में दो नए प्रांतों, उड़ीसा (बिहार से पृथक) और सिंध (बम्बई प्रेसिडेंसी से पृथक) का निर्माण वैधानिक रूप से किया गया था। अतः कथन सत्य है। कारण भी तथ्यतः सत्य है क्योंकि इन प्रांतों के गठन का मूलाधार केवल प्रशासनिक सुविधा नहीं, बल्कि भाषाई पहचान (उड़ीसा हेतु) और सांप्रदायिक जनसांख्यिकी संतुलन (सिंध को मुस्लिम बहुल प्रांत बनाने हेतु) का विधिक विन्यास था। परंतु यह स्वतंत्र प्रादेशिक भूगोल का तथ्य है, जो कथन की कोई प्रत्यक्ष तार्किक व्याख्या प्रस्तुत नहीं करता है।

**प्रश्न:17** 1935 के अधिनियम के तहत केंद्र में द्वैध शासन प्रणाली के विनियामक विन्यास के संबंध में निम्नलिखित कथनों और निष्कर्षों का मूल्यांकन कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 1935 के अधिनियम द्वारा केंद्र में द्वैध शासन स्थापित कर संघीय विषयों को विभाजित किया गया। निष्कर्ष I सर्वथा असत्य है क्योंकि रक्षा, वैदेशिक मामले और धार्मिक मामले जैसे देश के सर्वोच्च सामरिक महत्व के विषयों को भारतीय मंत्रियों के नियंत्रण से पूर्णतः दूर रखकर 'आरक्षित' (Reserved) श्रेणी में विन्यासित किया गया था। निष्कर्ष II पूरी तरह सत्य है; इन आरक्षित विषयों का संपूर्ण प्रशासनिक संचालन गवर्नर-जनरल अपनी परिषद की सहायता से करता था, जो केंद्रीय विधायिका के प्रति विधिक रूप से उत्तरदायी नहीं थे और केवल भारत सचिव के प्रति जवाबदेह थे।

**प्रश्न:18** आधुनिक भारतीय संवैधानिक कड़ियों और औपनिवेशिक विलेखों के विनियामक स्रोतों को उनके विनिर्दिष्ट प्रावधानों के साथ सुमेलित कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** आधुनिक संवैधानिक विन्यासों के औपनिवेशिक स्रोतों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: सातवीं अनुसूची के शक्तियों के त्रिविध आनुपातिक विभाजन का मूल ढांचा 1935 के अधिनियम की त्रिविध विधायी सूचियों (संघ, प्रांतीय, समवर्ती) से लिया गया है (a-2)। केंद्र-राज्य वित्तीय संतुलन और वित्त आयोग का मूलाधार 1935 के अधिनियम के रिजर्व बैंक और ओटो नीमेयर वित्तीय आवंटन विन्यास से प्रेरित है (b-3)। न्यायिक पिरामिड और अपीलीय कड़ियों का संस्तर 1935 के अधिनियम के संघीय न्यायालय संस्तर से जुड़ा है (c-1)। अंततः, संकटकाल में केंद्र की विधायी सर्वोच्चता (अनुच्छेद 250) का विलेख 1935 के अधिनियम की धारा 102 के संकटकालीन विधायी प्रक्रम से जनित है (d-4)।

**प्रश्न:19** भारत शासन अधिनियम 1919 द्वारा निर्मित 'राज्य परिषद' (Council of State) के सांख्यिकीय विन्यास और विधायी स्वरूप के संदर्भ में कौन सा कथन असंगत है?

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C असंगत होने के कारण सही उत्तर है। 1919 के अधिनियम के विन्यास के तहत 'राज्य परिषद' (उच्च सदन) में महिलाओं को सदस्यता प्राप्त करने या नामांकित होने का विधिक अधिकार पूर्णतः वर्जित किया गया था; वे इस सदन की सदस्य बनने हेतु वैधानिक रूप से अपात्र थीं (यद्यपि वे केंद्रीय विधानसभा की सदस्य बन सकती थीं)। अन्य सभी विकल्प (5 वर्ष का कार्यकाल, 60 सदस्यों में से 34 का निर्वाचित होना और अत्यंत सीमित व उच्च संपत्ति आधारित चुनावी मेखला का होना) ऐतिहासिक और विधिक रूप से पूरी तरह सत्य प्रतिरूप हैं।

**प्रश्न:20** भारत शासन अधिनियम 1935 की वैधानिक सीमाओं और संप्रभुता के विन्यास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता औपनिवेशिक नियंत्रण को अक्षुण्ण बनाए रखने का अकादमिक प्रमाण प्रस्तुत करती है?

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** भारत शासन अधिनियम 1935 ने प्रांतीय स्वायत्तता का दिखावा तो किया, परंतु संप्रभुता का विन्यास पूरी तरह ब्रिटिश संसद के अधीन अक्षुण्ण रखा। भारतीय विधानमंडलों को इस अधिनियम की किसी भी धारा या विलेख में संशोधन, परिवर्धन या निरसन करने का कोई विधिक अधिकार नहीं था; यह शक्ति केवल ब्रिटिश संसद के पास सुरक्षित थी। विकल्प B असत्य है क्योंकि निरंकुश वीटो हेतु विधिक कारण और विशेष उत्तरदायित्व की सीमाएं विनिर्दिष्ट थीं। विकल्प C असत्य है क्योंकि अधिनियम ने सांप्रदायिक निर्वाचन को समाप्त करने के बजाय उसका विस्तार दलितों और महिलाओं तक कर दिया था। विकल्प D असत्य है क्योंकि भारत सचिव का पद बना रहा था।

**प्रश्न:21**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** भारत शासन अधिनियम 1919 के तहत केंद्रीय व्यवस्थापिका में उच्च सदन यानी राज्य परिषद का कार्यकाल 5 वर्ष निश्चित था, न कि 3 वर्ष; 3 वर्ष का कार्यकाल केंद्रीय विधानसभा का था। अतः कथन I असत्य है। कथन II पूरी तरह सत्य है क्योंकि 1935 के अधिनियम के तहत प्रस्तावित संघीय विधानसभा में देशी रियासतों हेतु 125 सीटें (कुल 375 में से) आरक्षित थीं। कथन III असत्य है क्योंकि 1935 के अधिनियम ने मेस्टन योजना के प्रांतीय अंशदान को पूरी तरह समाप्त कर प्रांतों को वित्तीय राहत प्रदान की थी।

**प्रश्न:22**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** महात्मा गांधी ने क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों को 'उत्तर-तिथीय चेक' (Post-dated Cheque) कहा था क्योंकि इसके सभी वादे युद्ध के बाद के भविष्य पर टिके थे। अतः कथन सत्य है। कारण सर्वथा असत्य है क्योंकि क्रिप्स मिशन ने भारत को डोमिनियन स्टेटस देने के साथ-साथ ब्रिटिश राष्ट्रमंडल से अलग होने और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में संप्रभु विलेख दर्ज करने की पूर्ण विधिक स्वतंत्रता प्रदान करने का वादा किया था। कांग्रेस द्वारा इसे खारिज करने का मुख्य कारण 'नॉन-एक्सेशन क्लॉज' और रक्षा विभाग का ब्रिटिश कमान में रहना था।

**प्रश्न:23**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** कैबिनेट मिशन 1946 ने प्रांतों को तीन समूहों में विभाजित किया था। समूह 'B' के अंतर्गत उत्तर-पश्चिम मुस्लिम बहुल प्रांत (पंजाब, उत्तर-पश्चिम सीमांत प्रांत और सिंध) शामिल थे, अतः निष्कर्ष I सत्य है। निष्कर्ष II असत्य है क्योंकि असम प्रांत को समूह 'A' में नहीं, बल्कि बंगाल के साथ समूह 'C' (उत्तर-पूर्व मुस्लिम बहुल संभाग) के अंतर्गत विधिक रूप से वर्गीकृत किया गया था। इसका कांग्रेस और असम के मुख्यमंत्री गोपीनाथ बारदोलोई ने कड़ा विरोध किया था।

**प्रश्न:24**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** औपनिवेशिक काल के इन विलेखों का सही विनियामक मिलान इस प्रकार है: वायसराय की परिषद में सवर्ण हिंदुओं और मुस्लिमों को पूर्ण सांख्यिकीय समानता देने का प्रावधान लॉर्ड वेवेल योजना 1945 में शिमला सम्मेलन के दौरान प्रस्तुत किया गया था (a-4)। प्रांतों को संघ से अलग रहने का अनन्य विधिक अधिकार सर स्टैफोर्ड क्रिप्स प्रस्ताव 1942 में प्रख्यापित था (b-1)। अल्पसंख्यकों की सहमति के बिना सत्ता हस्तांतरण न करने का वादा लॉर्ड लिनलिथगो के अगस्त प्रस्ताव 1940 का हिस्सा था (c-3)। शिथिल केंद्रीकृत त्रि-स्तरीय संघ और 389 सदस्यीय संविधान सभा का ब्लूप्रिंट कैबिनेट मिशन योजना 1946 द्वारा दिया गया था (d-2)।

**प्रश्न:25**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** विकल्प B में बारीक सांख्यिकीय त्रुटि होने के कारण यह असंगत है। जुलाई-अगस्त 1946 के चुनावों में डॉ. बी. आर. अंबेडकर की पार्टी शेड्यूल्ड कास्ट फेडरेशन ने केवल 1 सीट पर विधिक विजय प्राप्त की थी, न कि 5 सीटों पर। अन्य सभी विकल्प ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं: कुल सदस्य संख्या 389 (जिसमें 93 रियासतों के थे) निश्चित थी, निर्दलीय उम्मीदवारों ने 8 सीटों पर विजय प्राप्त की थी, तथा मुख्य दलीय परिणामों में कांग्रेस को 208 और मुस्लिम लीग को 73 सीटें प्राप्त हुई थीं।

**प्रश्न:26**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** प्रसिद्ध ब्रिटिश संविधान विशेषज्ञ ग्रैनविले ऑस्टिन ने अपनी प्रामाणिक पुस्तक 'द इंडियन कॉन्स्टिट्यूशन: कॉर्नरस्टोन ऑफ ए नेशन' में संविधान सभा के आंतरिक दलीय ढांचे का विश्लेषण करते हुए लिखा था कि 'संविधान सभा अनिवार्य रूप से एकदलीय देश का एकसदनीय निकाय थी। वह सभा ही कांग्रेस थी और कांग्रेस ही भारत था।' यह टिप्पणी सभा के भीतर कांग्रेस पार्टी के 208 सीटों के विशाल सांख्यिकीय और विधायी भार को परिलक्षित करती है, जिसने सर्वसम्मत निर्णयों को गतिक बनाया।

**प्रश्न:27**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** संविधान सभा के कार्यो (विधायी संसद भूमिका) से संबद्ध विशेष समिति के विधिक अध्यक्ष जी. वी. मावलंकर विनिर्दिष्ट थे, अतः विकल्प C सत्य है। विकल्प A असत्य है क्योंकि मौलिक अधिकार उप-समिति के प्रमुख जे. बी. कृपलानी थे (एच. सी. मुखर्जी अल्पसंख्यक उप-समिति के अध्यक्ष थे)। विकल्प B असत्य है क्योंकि सादुल्ला मुस्लिम लीग के प्रतिनिधि थे, कांग्रेस के टिकट पर निर्वाचित एकमात्र सदस्य डॉ. के. एम. मुंशी थे। विकल्प D असत्य है क्योंकि तदर्थ राष्ट्रीय ध्वज समिति के अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद थे।

**प्रश्न:28**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 1919 का अधिनियम पूर्णतः एकात्मक शासन प्रणाली का विन्यास था जहाँ प्रांतों का अपना कोई स्वतंत्र विधिक अस्तित्व नहीं था, अतः कथन I सत्य है। कथन III भी सत्य है क्योंकि 1935 के अधिनियम की धारा 104 के तहत अवशिष्ट शक्तियों का अनन्य नियंत्रण गवर्नर-जनरल के व्यक्तिगत विवेक को सौंपा गया था। कथन II असत्य है क्योंकि 1935 के अधिनियम के तहत 11 ब्रिटिश प्रांतों का संघ में सम्मिलित होना पूरी तरह अनिवार्य (Mandatory) रखा गया था, केवल देशी रियासतों के लिए यह स्वैच्छिक था।

**प्रश्न:29**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 2 सितंबर 1946 को गठित अंतरिम सरकार में मुस्लिम लीग प्रारंभ में शामिल नहीं हुई थी, परंतु 26 अक्टूबर 1946 को लीग के पांच प्रतिनिधि इसमें शामिल हुए और लियाकत अली खान को 'वित्त विभाग' सौंपा गया। अतः कथन पूरी तरह सत्य है। कारण भी ऐतिहासिक रूप से सत्य है कि लीग का उद्देश्य इस कपाट पर नियंत्रण कर कांग्रेस के निर्णयों में राजकोषीय गतिरोध उत्पन्न करना था, जैसा उन्होंने बजट में किया। परंतु यह स्वतंत्र प्रशासनिक विभागों का विन्यास है, जो कथन की कोई प्रत्यक्ष तार्किक व्याख्या नहीं प्रस्तुत करता क्योंकि विभागों का आवंटन वेवेल द्वारा किया गया था।

**प्रश्न:30**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** विभाजन विलेख के प्रभाव से प्रतिनिधियों के हास के कारण संविधान सभा की कुल सांख्यिकी 389 से घटकर 299 रह गई। इसमें देशी रियासतों के मनोनीत प्रतिनिधियों की कुल सांख्यिकीय संख्या 93 से घटकर 70 रह गई, अतः निष्कर्ष । पूरी तरह सत्य है। निष्कर्ष ॥ सर्वथा असत्य है क्योंकि पुनर्गठित प्रांतीय सीटों के अद्यतन सांख्यिकीय विन्यास के अंतर्गत सर्वोच्च विधायी प्रतिनिधित्व **मद्रास प्रांत** को कुल 49 सीटों के साथ प्राप्त हुआ था (बम्बई प्रेसिडेंसी को केवल 21 सीटें मिली थीं)।

**प्रश्न:31**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन ऐतिहासिक संवैधानिक प्रक्रमों की तिथियों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: पंडित नेहरू ने 13 दिसंबर 1946 को संविधान सभा के पटल पर 'उद्देश्य प्रस्ताव' प्रस्तुत किया था (a-3)। इस प्रस्ताव को सभा द्वारा सर्वसम्मति से 22 जनवरी 1947 को आधिकारिक रूप से स्वीकार किया गया (b-1)। संविधान सभा ने एक विशेष विधायी संकल्प पारित करके 29 अगस्त 1947 को 'प्ररूप समिति' (Drafting Committee) का वैधानिक गठन किया (c-4)। इसके अगले दिन, 30 अगस्त 1947 को डॉ. भीमराव अंबेडकर को सर्वसम्मति से समिति का विधिक अध्यक्ष चुना गया (d-2)।

**प्रश्न:32**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C में सांख्यिकीय प्रतिस्थापन की त्रुटि होने के कारण यह असंगत है। वर्ष 1948 में प्रारूप समिति के मूल सदस्य डी. पी. खेतान की आकस्मिक मृत्यु हो जाने के कारण उत्पन्न हुई सांख्यिकीय रिक्तता को भरने हेतु **टी. टी. कृष्णामाचारी** को शामिल किया गया था, न कि एन. गोपालस्वामी आयंगर को (आयंगर समिति के मूल संस्थापक सदस्य थे)। अन्य सभी विकल्प (अल्लादि कृष्णास्वामी अय्यर का मद्रास का पूर्व एडवोकेट होना, बी. एल. मित्र के स्थान पर एन. माधव राव की नियुक्ति तथा के. एम. मुंशी का एकमात्र विशुद्ध कांग्रेसी सदस्य होना) विधिक रूप से पूर्णतः सत्य हैं।

**प्रश्न:33**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** देशी रियासतों की प्रारंभिक बहिष्कार की नीति के मध्य, 28 अप्रैल 1947 को संविधान सभा के तीसरे सत्र के दौरान पहली बार **छह देशी रियासतों** के मनोनीत प्रतिनिधियों ने अपने विधिक कपाट खोलते हुए सभा में अपनी वैधानिक प्रविष्टि दर्ज की थी। इन छह ऐतिहासिक रियासतों के नाम बड़ौदा, बीकानेर, जयपुर, पटियाला, रीवा और जोधपुर विनिर्दिष्ट थे। इसके पश्चात ही 3 जून 1947 की योजना के बाद अन्य रियासतों के शासकों ने अपने प्रतिनिधियों को भेजना विधिक रूप से अनिवार्य किया था।

**प्रश्न:34**

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम 1947 के प्रवर्तन से संविधान सभा को दोहरी विधायी भूमिका प्राप्त हुई। जब यह सभा सामान्य कानूनों का निर्माण करने हेतु अंतरिम व्यवस्थापिका के रूप में बैठती थी, तो इसकी अध्यक्षता जी. वी. मावलंकर करते थे और वे स्वतंत्र भारत की प्रथम विधायी संसद के पहले स्पीकर बने, अतः विकल्प D सत्य है। विकल्प A और B असत्य हैं क्योंकि उनके कार्य परस्पर बदल दिए गए हैं। विकल्प C असत्य है क्योंकि यह दोहरी भूमिका 26 नवंबर 1949 को संविधान अंगीकार होने के साथ ही समाप्त हो गई थी, जिसके बाद सभा केवल अंतरिम संसद के रूप में गतिक रही।

**प्रश्न:35**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** कथन I और III पूरी तरह सत्य हैं। 1919 के अधिनियम द्वारा सांप्रदायिक निर्वाचन का विस्तार सिख, ईसाइयों और एंग्लो-इंडियनों तक किया गया तथा मताधिकार अत्यंत संकीर्ण (3%) रखा गया, जबकि 1935 के अधिनियम में मताधिकार का दायरा बढ़कर कुल जनसंख्या का लगभग 10% हो गया था। कथन II सर्वथा

असत्य है क्योंकि 1935 के अधिनियम ने सांप्रदायिक निर्वाचन प्रणाली को समाप्त नहीं किया था, बल्कि इसका चरम विस्तार करते हुए दलित जातियों (SC), महिलाओं तथा श्रमिकों हेतु पृथक चुनावी मेखलाएं विधिक रूप से आरक्षित की थीं।

**प्रश्न:36**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनों ही दलों ने मार्च 1942 में सर स्टैफोर्ड क्रिप्स द्वारा प्रस्तुत विधिक प्रस्तावों को पूर्णतः खारिज कर दिया था, अतः कथन पूरी तरह सत्य है। कारण भी तथ्यतः सत्य है कि क्रिप्स प्रस्तावों में निहित 'नॉन-एक्सेशन क्लॉज' ने प्रांतों को संघ से अलग रहने और पृथक विलेख बनाने का वैधानिक अधिकार देकर भारत के भौगोलिक विखंडन का बीज बोया था। परंतु यह कांग्रेस द्वारा अस्वीकार किए जाने का प्राथमिक कारण था; मुस्लिम लीग ने इसे इसलिए खारिज किया था क्योंकि इसमें पाकिस्तान के विनिर्माण की मांग को सीधे शब्दों में स्वीकार नहीं किया गया था। अतः यह 'सत्य परंतु व्याख्या नहीं' श्रेणी का विन्यास है।

**प्रश्न:37**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** अप्रत्यक्ष चुनाव प्रतिरूप के बावजूद संविधान सभा में व्यापक सामाजिक संतुलन था। निष्कर्ष। पूरी तरह सत्य है; भारतीय संविधान सभा के प्रारंभिक संस्तर में महिला जनसांख्यिकी का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु कुल 15 महिला सदस्य शामिल थीं। निष्कर्ष II सर्वथा असत्य है क्योंकि सांख्यिकीय आंकड़े परस्पर बदल दिए गए हैं; सभा के भीतर शोषित वर्गों के विधिक अधिकारों के संरक्षण हेतु कुल **26 सदस्य अनुसूचित जाति (SC)** के तथा **33 सदस्य अनुसूचित जनजाति (ST)** वर्ग के विधिक रूप से शामिल थे।

**प्रश्न:38**

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** संविधान सभा द्वारा संपादित इन ऐतिहासिक कार्यों का सही विधिक तिथि मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: सभा ने 22 जुलाई 1947 को तिरंगे को भारत के आधिकारिक 'राष्ट्रीय ध्वज' के रूप में विधिक संस्तुति प्रदान की थी (a-3)। मई 1949 में संविधान सभा ने राष्ट्रमंडल (Commonwealth) में स्वतंत्र भारत की सदस्यता का विधिक सत्यापन किया (b-1)। 24 जनवरी 1950 को आयोजित अंतिम आधिकारिक बैठक में 'जन गण मन' को राष्ट्रीय गान तथा 'वंदे मातरम' को राष्ट्रीय गीत के रूप में अंगीकार किया गया (c-2) तथा इसी दिन सर्वसम्मति से डॉ. राजेंद्र प्रसाद को स्वतंत्र भारत का प्रथम राष्ट्रपति विधिक रूप से चुना गया था (d-2)।

**प्रश्न:39**

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C असंगत होने के कारण सही उत्तर है। 1919 के मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के विन्यास के अंतर्गत केंद्रीय विधायिका के उच्च सदन अर्थात् 'राज्य परिषद' (Council of State) के भीतर महिलाओं को सदस्यता प्राप्त करने और अपने मताधिकार का प्रयोग करने का विधिक अधिकार पूर्ण रूप से **वर्जित (Excluded)** किया गया था; वे इस सदन की सदस्य बनने हेतु वैधानिक रूप से पूरी तरह अपात्र थीं। अन्य सभी विकल्प (60 कुल सदस्य जिसमें 26 मनोनीत थे, 34 निर्वाचित में से 20 सामान्य क्षेत्रों के होना तथा अत्यधिक उच्च संपत्ति आधारित संकीर्ण मताधिकार का होना) विधिक रूप से पूरी तरह सत्य हैं।

**प्रश्न:40**

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** आधुनिक भारत के संविधान के मुख्य शिल्पकार डॉ. बी. आर. अंबेडकर का प्रारंभिक विधिक निर्वाचन बंगाल प्रांत के 'पूर्वी बंगाल' भूखंड से हुआ था। विभाजन विलेख (3 जून 1947) के प्रभाव से यह संपूर्ण क्षेत्र पाकिस्तान का हिस्सा बन गया, जिससे उनकी सदस्यता समाप्त हो गई। उनके विधिक ज्ञान की अपरिहार्यता को देखते हुए संवैधानिक सलाहकार बी. एन. राव की संस्तुति पर अध्यक्ष डॉ. राजेंद्र प्रसाद के निर्देशानुसार बम्बई प्रेसिडेंसी की **पुणे सीट से एम. आर. जयकर (M. R. Jayakar) से विधिक त्यागपत्र**

**दिलवाया गया** और उस रिक्त सीट पर उपचुनाव कराकर डॉ. अंबेडकर को पुनः सभा का सदस्य विधिक रूप से निर्वाचित कराया गया था।

**प्रश्न:41** भारतीय संविधान की राजनैतिक प्रकृति और संघात्मक प्रतिरूप के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** के.सी. व्हीयर ने भारतीय संविधान को 'अर्ध-संघात्मक' (Quasi-Federal) कहा है, न कि 'सौदेबाजी वाला संघवाद'। सौदेबाजी वाले संघवाद की संज्ञा मौरिस जोन्स द्वारा दी गई थी, अतः कथन I असत्य है। कथन II भी असत्य है क्योंकि भारतीय संघ राज्यों के बीच किसी स्वैच्छिक समझौते का परिणाम नहीं है (जैसा कि अमेरिकी संघ है)। कथन III पूरी तरह सत्य है; आपातकाल (अनुच्छेद 352-360) के दौरान भारत की संघीय राजव्यवस्था बिना किसी औपचारिक संविधान संशोधन के स्वतः ही पूर्णतः एकात्मक स्वरूप में परिवर्तित हो जाती है, जो इसकी सामरिक और रक्षात्मक विशेषता है।

**प्रश्न:42** भारतीय संविधान के विदेशी स्रोतों और विभिन्न देशों के वैधानिक विन्यास...

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** कथन सर्वथा असत्य है क्योंकि 'विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया' (Procedure Established by Law) का विनियामक संस्तर जापानी संविधान के अनुच्छेद 31 से प्रेरित होकर ग्रहण किया गया था, न कि संयुक्त राज्य अमेरिका से। कारण पूरी तरह सत्य है; अमेरिकी संवैधानिक दर्शन मुख्य रूप से 'विधि की उचित प्रक्रिया' (Due Process of Law) के सिद्धांत पर आधारित है, जो न्यायपालिका को विधायी अधिनियमों के प्रक्रियात्मक के साथ-साथ तार्किक औचित्य की जाँच करने की व्यापक संप्रभु शक्ति प्रदान करता है।

**प्रश्न:43** भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताएं और उसके विनियामक लचीलेपन के संबंध में...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** निष्कर्ष I असत्य है क्योंकि नए राज्यों का निर्माण, नामों और सीमाओं में परिवर्तन (अनुच्छेद 3-4) संसद साधारण बहुमत से कर सकती है, और इसे अनुच्छेद 368 के तहत तकनीकी रूप से 'संविधान संशोधन' नहीं माना जाता है। निष्कर्ष II भी असत्य है क्योंकि भारतीय संविधान को 'विश्व का सबसे बड़ा और विस्तृत विलेख' कहने का श्रेय आईवर जेनिंग्स को तो है, परंतु यह इसकी व्यापकता का लक्षण है, न कि इसके विधायी लचीलेपन का परिणाम। अतः दोनों निष्कर्ष स्वतंत्र रूप से असत्य विन्यासों को प्रदर्शित करते हैं।

**प्रश्न:44** भारतीय संविधान में समाहित विभिन्न दार्शनिक आदर्शों एवं विनियामक प्रावधानों को...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन संवैधानिक आदर्शों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: प्रस्तावना में सन्निहित 'स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व' के दार्शनिक आदर्श वर्ष 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के ऐतिहासिक विलेखों से प्रेरित हैं (a-3)। राष्ट्रपति की विशिष्ट निर्वाचन पद्धति एवं नीति निदेशक तत्वों का संस्तर आयरलैंड के संविधान से ग्रहण किया गया है (b-1)। उच्चतम न्यायालय का परामर्शदात्री क्षेत्राधिकार (अनुच्छेद 143) कनाडा के संघीय विनियामक ढांचे से लिया गया है (c-2)। अंततः, संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक (अनुच्छेद 108) और व्यापार की स्वतंत्रता ऑस्ट्रेलिया के वैधानिक प्रक्रम से जनित है (d-4)।

**प्रश्न:45** भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित राजनैतिक दर्शन और दार्शनिक आयामों...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C में बारीक तथ्यात्मक त्रुटि होने के कारण यह असंगत विन्यास है। 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा प्रस्तावना में केवल दो नहीं, बल्कि **तीन नए शब्द** विधिक रूप से अंतःस्थापित किए गए थे—'समाजवादी', 'पंथनिरपेक्ष' (पंथनिरपेक्षता) और 'अखंडता' (राष्ट्र की एकता और अखंडता)। अन्य सभी विकल्प (न्याय के आदर्शों का 1917 की रूसी क्रांति से प्रेरित होना, 'हम भारत के लोग' का अमेरिकी/UN विन्यास के सदृश होना तथा गणराज्य का अर्थ राष्ट्राध्यक्ष का परोक्ष रूप से निर्वाचित होना) विधिक रूप से पूरी तरह सत्य हैं।

**प्रश्न:46** "वर्ष 1960 के बेरुबाड़ी संघ मामले में सर्वोच्च न्यायालय की 8 न्यायाधीशों की पीठ ने..."

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** वर्ष 1973 के ऐतिहासिक केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य वाद में 13 न्यायाधीशों की सबसे बड़ी पीठ ने बेरुबाड़ी वाद (1960) के संकुचित विधिक दृष्टिकोण को पूर्णतः उलट दिया। न्यायालय ने प्रतिपादित किया कि प्रस्तावना संविधान का एक अभिन्न और आंतरिक भाग है। मुख्य न्यायाधीश एस.एम. सीकरी ने स्पष्ट किया कि चूँकि यह संविधान का भाग है, अतः संसद अनुच्छेद 368 की विधायी शक्ति का प्रयोग करके इसमें संशोधन कर सकती है, बशर्ते इसके माध्यम से संविधान के 'मूल ढाँचे' (Basic Structure) का विखंडन या हास न किया जाए।

**प्रश्न:47** भारतीय संविधान की प्रस्तावना में प्रयुक्त दार्शनिक शब्द 'पंथनिरपेक्षता'...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** भारत ने पश्चिमी देशों की धर्मनिरपेक्षता के 'नकारात्मक' मॉडल (जहाँ धर्म और राज्य का पूर्ण विच्छेद होता है) के विपरीत '**सकारात्मक पंथनिरपेक्षता**' के मॉडल को वैधानिक रूप से अपनाया है। इसका दार्शनिक अर्थ 'सर्व धर्म समभाव' है, अर्थात् राज्य का अपना कोई आधिकारिक धर्म (State Religion) नहीं होगा, परंतु वह देश के सभी धर्मों को समान आदर, तटस्थता और विधिक संरक्षण प्रदान करेगा। अनुच्छेद 25 से 28 के धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार इस दार्शनिक स्तंभ को वास्तविक विधिक प्रवर्तनीय शक्ति प्रदान करते हैं।

**प्रश्न:48** भारतीय संविधान के एकात्मक झुकाव को प्रदर्शित करने वाले विनियामक लक्षणों...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** कथन I और III पूरी तरह सत्य हैं। एकल नागरिकता, एकीकृत न्यायपालिका और राज्यपालों का मनोनयन सशक्त एकात्मक लक्षण हैं, तथा अलेक्जेंड्रोविच ने के.सी. व्हीयर के अर्ध-संघात्मक विरोधाभास का खंडन कर इसे 'सच्चा संघ' माना है। कथन II सर्वथा असत्य है क्योंकि अखिल भारतीय सेवाओं (अनुच्छेद 312) का विन्यास एकात्मकता की ओर झुकाव प्रदर्शित करता है; इन सेवाओं के सदस्यों पर अंतिम विनियामक और दंडात्मक नियंत्रण केंद्र सरकार का होता है, न कि प्रांतों की राज्य सरकारों का।

**प्रश्न:49** भारतीय संविधान की विस्तृत प्रकृति और उसके वृहद प्रशासनिक विन्यास...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** भारतीय संविधान विश्व का सबसे विस्तृत और लिखित विन्यास है जिसमें मूल रूप से 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियां शामिल थीं। अतः कथन सत्य है। कारण भी ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह प्रामाणिक है कि भारत शासन अधिनियम 1935 के व्यापक विलेख का प्रभाव तथा राज्यों व केंद्र हेतु पृथक व्यवस्था के स्थान पर एक ही 'एकल संविधान' का होना इसकी विशालता का मूलाधार था। परंतु यह इसकी विस्तृत प्रकृति के कारणों का विवरण है, जो कथन की कोई प्रत्यक्ष तार्किक व्याख्या (कथन और कारण दोनों स्वतंत्र रूप से सत्य तथ्य हैं) प्रस्तुत नहीं करता है।

**प्रश्न:50** भारतीय राजव्यवस्था के संघीय सिद्धांतों और शक्तियों के विभाजन के संबंध में...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** सातवीं अनुसूची के माध्यम से शक्तियों का स्पष्ट विभाजन संघात्मक राजव्यवस्था का मूल लक्षण है। निष्कर्ष I सर्वथा असत्य है क्योंकि भारत में 'अवशिष्ट शक्तियाँ' (Residuary Powers) अमेरिकी मॉडल के विपरीत (जहाँ वे राज्यों के पास होती हैं) अनुच्छेद 248 के तहत संसद (केंद्र) के पास विधिक रूप से सुरक्षित रखी गई हैं, जो कनाडा के मॉडल से प्रेरित है। निष्कर्ष II पूरी तरह सत्य है; अनुच्छेद 254 (डॉक्ट्रिन ऑफ रिपगनेंसी) के विन्यास के अनुसार समवर्ती सूची में विधिक टकराव की स्थिति में संघीय (केंद्रीय) कानून को प्रांतीय कानून पर सर्वोच्चता प्राप्त होती है।

**प्रश्न:51** भारतीय संविधान की मुख्य विशेषताओं और विभिन्न देशों से अंगीकार की गई...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन विदेशी विनियामक स्रोतों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: एकल नागरिकता एवं विधायी प्रक्रिया का वेस्टमिंस्टर प्रतिरूप ब्रिटेन की संसदीय शासन प्रणाली से लिया गया है (a-3)। विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया का विनियामक संस्तर जापानी संवैधानिक दर्शन से प्रेरित है (b-1)। आपातकाल के दौरान मौलिक अधिकारों का संकटकालीन स्थगन जर्मनी के वेइमर संविधान से ग्रहण किया गया है (c-2)। अंततः, मूल

अधिकारों का विलेख, न्यायपालिका की स्वतंत्रता एवं न्यायिक पुनरावलोकन संयुक्त राज्य अमेरिका के अधिकार पत्र (Bill of Rights) से जनित है (d-4)।

**प्रश्न:52** भारतीय संविधान की प्रस्तावना की विधिक गतिकी और ऐतिहासिक वादों के...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** विकल्प B असंगत होने के कारण सही उत्तर है। वर्ष 1995 के एल.आई.सी. ऑफ इंडिया बनाम कंज्यूमर एजुकेशन एंड रिसर्च सेंटर वाद में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने पूर्ववर्ती निर्णयों की पुनः पुष्टि करते हुए आधिकारिक रूप से माना था कि **"प्रस्तावना संविधान का आंतरिक हिस्सा (Integral Part) है।"** न्यायालय ने इसे बाहरी आवरण मानने से पूर्ण इनकार कर दिया था। अन्य सभी विकल्प (गोलकनाथ वाद में न्यायमूर्ति सुब्बाराव की टिप्पणी, विधायिका की शक्ति का स्रोत न होना तथा गैर-न्यायसंगत प्रकृति का होना) विधिक रूप से पूरी तरह सत्य प्रतिरूप हैं।

**प्रश्न:53** "भारतीय संविधान निर्माताओं ने देश की बहुसांस्कृतिक पारि-पारिस्थितिकी..."

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** भारतीय संविधान के संघीय ढांचे को एकपक्षीय विधायी आक्रमणों से सुरक्षित रखने हेतु अनुच्छेद 368 में कठोर व्यवस्था की गई है। सातवीं अनुसूची की विधायी सूचियों में कोई भी परिवर्तन, राष्ट्रपति के निर्वाचन की पद्धति (अनुच्छेद 54-55), संघ और राज्यों की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार तथा स्वयं अनुच्छेद 368 के प्रावधानों में संशोधन करने के लिए संसद के विशेष बहुमत के साथ-साथ कम से कम **आधे राज्यों के विधानमंडलों के साधारण बहुमत से पारित संकल्प (अनुसमर्थन)** की अनिवार्य वैधानिक आवश्यकता होती है। अन्य सभी विकल्प (गणपूर्ति, नागरिकता, नाम परिवर्तन) साधारण बहुमत से संशोधित होते हैं।

**प्रश्न:54** भारतीय संघवाद की प्रकृति का सूक्ष्म विश्लेषण करने वाले विदेशी राजनीतिक विचारकों...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** भारतीय संघवाद के दार्शनिक और प्रशासनिक विन्यास का विश्लेषण करते हुए मौरिस जोन्स ने इसे **'सौदेबाजी वाला संघवाद' (Bargaining Federalism)** कहा था, जहाँ केंद्र और राज्य सौदेबाजी की मेज पर संतुलन बनाते हैं। वहीं, प्रख्यात अमेरिकी संविधान विशेषज्ञ ग्रेनविले ऑस्टिन ने भारतीय विन्यास को **'सहयोगपूर्ण संघवाद' (Cooperative Federalism)** की संज्ञा दी थी, जहाँ केंद्र और राज्य एक-दूसरे के प्रतिस्पर्धी होने के बजाय लोक कल्याण हेतु पूरक के रूप में कार्य करते हैं। के.सी. व्हीयर ने इसे 'अर्ध-संघात्मक' कहा था।

**प्रश्न:55** 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा प्रस्तावना में किए गए शाब्दिक...

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** 42वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा प्रस्तावना में पहली बार तीन नए शब्दों—'समाजवादी', 'पंथनिरपेक्ष' और 'अखंडता' का समावेश किया गया, अतः कथन I सत्य है। कथन II भी सत्य है क्योंकि इसके द्वारा पूर्व से विद्यमान शब्दावली "राष्ट्र की एकता" को बदलकर "राष्ट्र की एकता और अखंडता" विस्थापित किया गया था। कथन III सर्वथा असत्य है क्योंकि भारतीय राजव्यवस्था के इतिहास में अब तक प्रस्तावना के भीतर अनुच्छेद 368 की विधायी शक्ति का प्रयोग **केवल एक बार** (1976 में) किया गया है, बार-बार नहीं।

**प्रश्न:56** भारतीय संविधान के संघात्मक लक्षणों और प्रांतीय स्वायत्तता के विनियामक...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** एक लिखित, विस्तृत और कठोर संविधान संघीय शासन व्यवस्था की अभेद्य रक्षात्मक दीवार होता है ताकि केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों का सीमांकन विधिक रूप से स्थायी रहे, अतः कथन पूरी तरह सत्य है। परंतु कारण सर्वथा असत्य है क्योंकि लिखित और कठोर संविधान केंद्र को एकपक्षीय निरंकुश शक्ति प्रदान नहीं करता; वरन् वह केंद्र सरकार को शक्तियों के अतिक्रमण से रोकता है और प्रांतों की स्वायत्तता को विधिक संरक्षण प्रदान करता है।

**प्रश्न:57** प्रस्तावना में सन्निहित 'लोकतंत्र' और 'गणराज्य' के दार्शनिक स्तंभों के संबंध में...

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** भारत में अप्रत्यक्ष संसदीय लोकतंत्र को अपनाया गया है जहाँ कार्यपालिका (मंत्रिपरिषद्) अपने सभी विलेखों हेतु विधायिका के प्रति सामूहिक रूप से उत्तरदायी होती है, अतः निष्कर्ष । सत्य है। निष्कर्ष ॥ सर्वथा असत्य है क्योंकि 'गणराज्य' (Republic) का दार्शनिक कूट यह घोषित करता है कि राजनीतिक संप्रभुता किसी एक व्यक्ति या राजा या विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के हाथ में होने के स्थान पर **भारत की संपूर्ण जनता में निहित होगी** और सभी सार्वजनिक पद प्रत्येक नागरिक हेतु बिना किसी भेदभाव के खुले होंगे।

**प्रश्न:58** भारतीय संविधान की प्रस्तावना में प्रयुक्त दार्शनिक लक्ष्यों और आदर्शों को...

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** प्रस्तावना के भीतर दार्शनिक लक्ष्यों का सही विन्यासक्रम इस प्रकार व्यवस्थित है: विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की पंचविध स्वतंत्रता (Liberty) का मूल आदर्श तीसरे स्थान पर प्रयुक्त है (a-3)। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय (Justice) का त्रिविध आयाम चौथे स्थान पर मूलाधार के रूप में विन्यासित है (b-4)। प्रतिष्ठा और अवसर की समता (Equality) प्रथम स्थान पर विलेख के रूप में है (c-1)। अंततः, व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की अखंडता सुनिश्चित करने का बंधुत्व (Fraternity) का संकल्प द्वितीय स्थान पर है (d-2)।

**प्रश्न:59** भारतीय संविधान की विस्तृत प्रकृति और उसके विशाल भौगोलिक-ऐतिहासिक...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** विकल्प B असंगत होने के कारण सही उत्तर है। मूल संविधान के विन्यास के अनुसार, जम्मू-कश्मीर राज्य हेतु प्रारंभ से एक एकल एकीकृत संविधान की व्यवस्था नहीं थी; वरन अनुच्छेद 370 के विशेष विनियामक संस्तर के तहत जम्मू-कश्मीर को अपना पृथक संविधान विनिर्मित करने की छूट दी गई थी, जो इसकी व्यापकता का अपवाद था (यद्यपि वर्तमान पारि-पारिस्थितिकी में यह अपवाद समाप्त हो चुका है)। अन्य सभी विकल्प (वकीलों की सांख्यिकी, प्रशासनिक प्रावधानों का संहिताबद्ध होना तथा भाग XVI के विशेष उपबंध) विस्तृत प्रकृति के अकादमिक लक्षण हैं।

**प्रश्न:60** प्रख्यात ब्रिटिश न्यायविद एन.ए. पालकीवाला द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** प्रख्यात विधिवेत्ता और न्यायविद एन.ए. पालकीवाला ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना के दार्शनिक और वैधानिक मर्म को रेखांकित करते हुए इसे '**संविधान का परिचय पत्र' (Identity Card of the Constitution)** कहा था। विकल्प A असत्य है क्योंकि के.एम. मुंशी ने प्रस्तावना को 'हमारी संप्रभु लोकतांत्रिक गणराज्य की जन्मकुंडली' कहा था। विकल्प C असत्य है क्योंकि ठाकुर दास भार्गव और पंडित नेहरू ने प्रस्तावना को 'संविधान का सबसे सम्मानित भाग और उसकी आत्मा' के रूप में विस्थापित किया था।

**प्रश्न:61** भारतीय संविधान के भाग III में संहिताबद्ध मौलिक अधिकारों के अंतर्गत 'समानता के अधिकार' के...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 103वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2019 द्वारा अनुच्छेद 15(6) और 16(6) को अंतःस्थापित करके आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के लिए शिक्षण संस्थाओं और सरकारी नौकरियों में **अधिकतम 10 प्रतिशत** आरक्षण का विन्यास किया गया था, न कि 15 प्रतिशत। अतः कथन I तथ्यतः असत्य है। इन्द्रा साहनी वाद (1992) में पिछड़ा वर्ग हेतु 50% की सीमा और क्रीमी लेयर का सिद्धांत दिया गया था तथा एम. नागराज वाद (2006) में SC/ST पदोन्नति आरक्षण हेतु पिछड़ापन, अपर्याप्त प्रतिनिधित्व और प्रशासनिक दक्षता (अनुच्छेद 335) के तीन विनियामक मानकों को अनिवार्य किया गया था।

**प्रश्न:62** अनुच्छेद 21 के अंतर्गत सन्निहित 'प्राण और दैहिक स्वतंत्रता के संरक्षण' के...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** मेनका गांधी वाद (1978) ने अनुच्छेद 21 की क्रांतिकारी न्यायिक व्याख्या करते हुए गोपालन वाद (1950) के संकुचित विधिक दृष्टिकोण को उलट दिया और स्थापित किया कि कानून की प्रक्रिया 'न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और अयुक्तिसंगत' होनी चाहिए। अतः कथन सत्य है। कारण सर्वथा असत्य है क्योंकि भारतीय संविधान निर्माताओं ने जानबूझकर अमेरिकी शब्दावली 'विधि की उचित प्रक्रिया' (Due Process of Law) के स्थान पर जापानी संविधान के अनुच्छेद 31 से प्रेरित 'विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया' (Procedure Established by Law)

को मूल पाठ में अपनाया था, जिसे मेनका गांधी वाद ने उदार व्याख्या द्वारा अमेरिकी सिद्धांत के समकक्ष पहुँचाया।

**प्रश्न:63** अनुच्छेद 32 के संवैधानिक उपचारों के अधिकार तथा न्यायपालिका की असाधारण रिट जारी करने की...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** अनुच्छेद 32 स्वयं में एक मौलिक अधिकार है। निष्कर्ष। असत्य है क्योंकि अनुच्छेद 226 के तहत उच्च न्यायालयों का रिट क्षेत्राधिकार अनुच्छेद 32 की तुलना में विधिक रूप से अधिक विस्तृत विन्यासित है; सर्वोच्च न्यायालय केवल मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन हेतु रिट जारी कर सकता है, जबकि उच्च न्यायालय मौलिक अधिकारों के साथ-साथ अन्य विधिक अधिकारों हेतु भी रिट जारी करने की संप्रभु शक्ति रखते हैं। निष्कर्ष ॥ पूरी तरह सत्य है; अनुच्छेद 32 का प्रयोग केवल भाग III द्वारा प्रदत्त मौलिक अधिकारों के उल्लंघन की स्थिति में ही किया जा सकता है, सामान्य विधिक या सिविल अधिकारों के हास हेतु नहीं।

**प्रश्न:64** राज्य के नीति निदेशक तत्वों (DPSP) में सन्निहित विभिन्न समाजवादी, गांधीवादी और उदार बौद्धिक...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन नीति निदेशक तत्वों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: समस्त नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता (UCC) सुनिश्चित करने का विन्यास अनुच्छेद 44 के धर्मनिरपेक्ष दार्शनिक आयाम से संबद्ध है (a-3)। उद्योगों के प्रबंधन में कर्मकारों की प्रभावी भागीदारी का निर्देश 42वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा अनुच्छेद 43-A के रूप में जोड़ा गया था (b-1)। छह वर्ष की आयु पूरी करने तक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखरेख और शिक्षा का दायित्व 86वें संविधान संशोधन 2002 द्वारा अनुच्छेद 45 के संशोधित स्वरूप में विस्थापित है (c-4)। अंततः, ग्रामीण क्षेत्रों में कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन देना अनुच्छेद 43 की गांधीवादी मेखला का हिस्सा है (d-2)।

**प्रश्न:65** मौलिक कर्तव्यों (भाग IV-A) के दार्शनिक विनिर्माण, सांस्थानिक सिफारिशों और नागरिक चेतना...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** विकल्प B में बारीक तथ्यात्मक त्रुटि होने के कारण यह असंगत विन्यास है। 42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा संविधान में भाग IV-A और अनुच्छेद 51-A को अंतःस्थापित करके नागरिकों हेतु सांख्यिकीय रूप से केवल 10 मौलिक कर्तव्य जोड़े गए थे, न कि 11। 11वां मौलिक कर्तव्य (शिक्षा का अवसर प्रदान करना) बाद में 86वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 द्वारा जोड़ा गया था। अन्य सभी विकल्प (स्वर्ण सिंह समिति द्वारा दंड और कर अदायगी की सिफारिश करना, वर्मा समिति 1999 द्वारा कानूनों की पहचान तथा कर्तव्यों का केवल नागरिकों पर लागू होना) ऐतिहासिक और विधिक रूप से पूरी तरह सत्य हैं।

**प्रश्न:66** "अनुच्छेद 368 के अंतर्गत संघीय ढांचे को प्रभावित करने वाले संवैधानिक उपबंधों को संशोधित..."

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** संविधान के संघीय विन्यास को केंद्र के एकपक्षीय विधायी आक्रमणों से सुरक्षित रखने हेतु अनुच्छेद 368 में विशेष व्यवस्था है। सातवीं अनुसूची की किसी भी विधायी सूची में कोई परिवर्तन, राष्ट्रपति के निर्वाचन की विनिर्दिष्ट पद्धति (अनुच्छेद 54-55), संघ और राज्यों की कार्यपालिका शक्ति का विस्तार, उच्चतम और उच्च न्यायालयों से संबंधित प्रावधान तथा स्वयं अनुच्छेद 368 में संशोधन करने हेतु संसद के विशेष बहुमत के साथ-साथ कम से कम आधे राज्यों के विधानमंडलों के अनुसमर्थन की अनिवार्य वैधानिक आवश्यकता होती है। अन्य विकल्प (विधान परिषद की समाप्ति, गणपूर्ति, नागरिकता) साधारण बहुमत से संशोधित होते हैं।

**प्रश्न:67** अनुच्छेद 19 के तहत प्रदत्त Constitutional लोकतांत्रिक स्वतंत्रताओं और उन पर राज्य द्वारा आरोपित...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** अनुच्छेद 19(5) के तहत भारत के राज्यक्षेत्र में सर्वत्र अबाध संचरण और निवास करने की स्वतंत्रता पर आम जनता के हित या किसी अनुसूचित जनजाति के हितों, उनकी संस्कृति और भाषा के संरक्षण हेतु विधिक रोक या युक्तिसंगत निर्बंधन आरोपित किए जा सकते हैं, अतः विकल्प B पूरी तरह सत्य है। विकल्प A असत्य है क्योंकि भाषण की स्वतंत्रता असीमित नहीं है, अनुच्छेद 19(2) के तहत इस पर प्रतिबंध लगाया जा

सकता है। विकल्प C असत्य है क्योंकि हड़ताल करने का अधिकार मौलिक अधिकार नहीं, वरन् एक वैधानिक श्रम विधिक अधिकार है। विकल्प D असत्य है क्योंकि राज्य को किसी भी व्यवसाय का पूर्ण राष्ट्रीयकरण करने का संप्रभु विधिक अधिकार प्राप्त है।

**प्रश्न:68** शोषण के विरुद्ध अधिकार (अनुच्छेद 23-24) और मानवीय गरिमा के विनियामक संरक्षण के संदर्भ में...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** कथन I असत्य है क्योंकि सर्वोच्च न्यायालय ने पीपल्स यूनियन फॉर डेमोक्रेटिक राइट्स बनाम भारत संघ वाद (एशियाड वर्कर्स केस) में स्पष्ट किया था कि 'बेगार' का अर्थ केवल शारीरिक बल नहीं है, बल्कि यदि किसी व्यक्ति को उसकी आर्थिक विवशता के कारण न्यूनतम मजदूरी से कम दर पर कार्य करने हेतु विवश किया जाता है, तो वह भी अनुच्छेद 23 के तहत 'बलात् श्रम' की श्रेणी में आता है। कथन II पूरी तरह सत्य है; राज्य सार्वजनिक हितों हेतु अनिवार्य सैन्य या सामाजिक सेवा लागू कर सकता है। कथन III भी सत्य है; 2016 के संशोधन द्वारा 14 वर्ष से कम आयु के बालकों का संकटमय और गैर-संकटमय सभी व्यवसायों में नियोजन पूर्णतः प्रतिबंधित है, केवल स्कूल के बाद पारिवारिक उद्यमों को छोड़कर।

**प्रश्न:69** अनुच्छेद 25 से 28 के धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार और भारतीय सकारात्मक पंथनिरपेक्षता...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** स्टेनिसलॉस वाद (1977) में सर्वोच्च न्यायालय ने व्यवस्था दी थी कि अनुच्छेद 25 में समाहित 'धर्म के प्रचार करने के अधिकार' में अन्य व्यक्तियों का जबर्न धर्मांतरण कराने का अधिकार शामिल नहीं है क्योंकि धर्मांतरण स्वतंत्रता के अंतःकरण के अधिकार का ह्रास करता है, अतः कथन सत्य है। कारण भी वित्तीय और धार्मिक पंथनिरपेक्षता का पूर्णतः प्रामाणिक विधिक सत्य है कि अनुच्छेद 27 के तहत राज्य करों के माध्यम से प्राप्त सार्वजनिक धन को किसी एक विशिष्ट धर्म के पोषण हेतु व्यय नहीं कर सकता। परंतु यह स्वतंत्र राजकोषीय पंथनिरपेक्षता का सिद्धांत है, जो धर्मांतरण और प्रचार से संबद्ध कथन की कोई प्रत्यक्ष तार्किक व्याख्या (दोनों स्वतंत्र रूप से सत्य विन्यास हैं) प्रस्तुत नहीं करता है।

**प्रश्न:70** मौलिक अधिकारों (भाग III) और राज्य के नीति निदेशक तत्वों (भाग IV) के मध्य प्राथमिकता के...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 25वें संशोधन द्वारा जोड़ा गया अनुच्छेद 31-C समाजवादी निदेशक तत्वों (39b और 39c) को मौलिक अधिकारों पर प्राथमिकता देता था। निष्कर्ष I सर्वथा असत्य है क्योंकि चंपकम दोराईराजन वाद (1951) में सर्वोच्च न्यायालय ने यह विधिक सिद्धांत प्रतिपादित किया था कि मौलिक अधिकार सर्वोपरि हैं और नीति निदेशक तत्वों को मौलिक अधिकारों के "सहायक" (Subsidiary) के रूप में कार्य करना होगा, वे अधिकारों का उल्लंघन नहीं कर सकते। निष्कर्ष II पूरी तरह सत्य है; मिनर्वा मिल्स वाद (1980) में न्यायपालिका ने 42वें संशोधन द्वारा किए गए अनुच्छेद 31-C के असीमित विस्तार को रद्द कर दोनों के मध्य संतुलन को संविधान का 'मूल ढांचा' घोषित किया था।

**प्रश्न:71** भारतीय न्यायिक तंत्र द्वारा मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन हेतु जारी की जाने वाली विभिन्न विशिष्ट...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन ऐतिहासिक प्रशासनिक रिटों का सही विधिक कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: किसी सार्वजनिक अधिकारी को उसके विधिक कर्तव्यों के अनिवार्य निर्वहन हेतु जारी आदेश 'परमादेश' (Mandamus) कहलाता है (a-4)। किसी व्यक्ति द्वारा अवैध रूप से किसी सार्वजनिक विनियामक पद को धारण करने की वैधानिक वैधता की जांच करने हेतु प्रयुक्त रिट 'अधिकार पृच्छा' (Quo-Warranto) विनिर्दिष्ट है (b-3)। किसी अधीनस्थ न्यायालय को अपने क्षेत्राधिकार का अतिक्रमण करने से रोकने (न्यायिक कार्य के दौरान ही रोक लगाने) हेतु गतिक होने वाली रिट 'प्रतिषेध' (Prohibition) है (c-1)। अंततः, अधीनस्थ न्यायालय में लंबित किसी वाद को निर्णय के पश्चात या विधिक त्रुटि सुधार हेतु उच्चतर न्यायालय में स्थानांतरित करने का न्यायिक आदेश 'उत्प्रेषण' (Certiorari) कहलाता है (d-2)।

**प्रश्न:72** 86वें संविधान संशोधन अधिनियम (2002) द्वारा शिक्षा के अधिकार के त्रिविध विन्यास और...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C में बारीक ऐतिहासिक और विधायी तिथि की त्रुटि होने के कारण यह असंगत विन्यास है। 86वें संशोधन के विनिर्देशों को व्यावहारिक रूप से लागू करने हेतु संसद द्वारा 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम' वर्ष 2009 (RTE Act, 2009) में पारित किया गया था, न कि 2005 में। यह ऐतिहासिक अधिनियम 1 अप्रैल 2010 से पूरे देश (जम्मू-कश्मीर को छोड़कर तत्कालीन समय में) में प्रभावी किया गया था। अन्य सभी विकल्प (अनुच्छेद 21-A के तहत मौलिक अधिकार, अनुच्छेद 45 के तहत प्रारंभिक बाल्यावस्था ECCE का 6 वर्ष तक सीमित होना तथा अनुच्छेद 51-A(k) के तहत अभिभावकों का नागरिक कर्तव्य बनना) विधिक रूप से पूरी तरह सत्य प्रतिरूप हैं।

**प्रश्न:73** "अनुच्छेद 20(3) अभियुक्तों को आत्म-अभिशासन से संरक्षण (Protection against Self-incrimination)..."

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** सेलवी बनाम कर्नाटक राज्य वाद (2010) में सर्वोच्च न्यायालय की तीन न्यायाधीशों की पीठ ने ऐतिहासिक विधिक सिद्धांत प्रतिपादित करते हुए घोषित किया कि किसी भी अभियुक्त या संदिग्ध व्यक्ति की इच्छा या सहमति के बिना उसका **नार्को एनालिसिस, पॉलीग्राफ टेस्ट (लाइ डिटेक्टर) और ब्रेन मैपिंग (P300 टेस्ट)** कराया जाना अनुच्छेद 20(3) के तहत आत्म-अभिशासन से संरक्षण के अधिकार तथा अनुच्छेद 21 के तहत निजता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का पूर्ण विधिक उल्लंघन है, क्योंकि यह व्यक्ति की मानसिक स्वायत्तता में अनधिकृत प्रवेश है। हालांकि, उंगलियों के निशान और डीएनए नमूनों का संकलन इसके दायरे से बाहर और वैध माना गया है।

**प्रश्न:74** अनुच्छेद 22 के तहत प्राप्त 'गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण' तथा निवारक निरोध (Preventive...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** अनुच्छेद 22(5) के तहत निवारक निरोध के अंतर्गत हिरासत में लिए गए व्यक्ति को यह विधिक अधिकार प्राप्त है कि वह अपनी गिरफ्तारी के आधारों को जानने हेतु राज्य से संपर्क कर सके और अपनी रिहाई हेतु अभ्यावेदन (Representation) दे सके, बशर्तें राज्य लोक हित के नाम पर तथ्यों को उजागर करने से मना न करे (अनुच्छेद 22(6))। अतः विकल्प C सत्य है। विकल्प A असत्य है क्योंकि मजिस्ट्रेट के समक्ष पेशी की समयावधि 24 घंटे विन्यासित है, न कि 12 घंटे। विकल्प B असत्य है क्योंकि सलाहकार बोर्ड की संस्तुति के बिना अधिकतम अवधि केवल 3 माह विनिर्दिष्ट है। विकल्प D असत्य है क्योंकि समवर्ती सूची प्रविष्टि के तहत संसद और राज्य विधानमंडल दोनों को निवारक निरोध कानून बनाने की विधायी शक्ति प्राप्त है।

**प्रश्न:75** अनुच्छेद 368 के तहत संविधान संशोधन की प्रक्रियात्मक गतिकी और संसद की विधायी सीमाओं के...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** कथन I असत्य है क्योंकि संविधान संशोधन विधेयक केवल संसद के किसी भी सदन (लोकसभा या राज्यसभा) में ही प्रस्तुत किया जा सकता है, इसे किसी भी राज्य के विधानमंडल में प्रस्तुत करने का कोई विधिक या संवैधानिक अधिकार प्रांतों को प्राप्त नहीं है। कथन II पूरी तरह सत्य है; दोनों सदनों द्वारा अलग-अलग विशेष बहुमत से पारित होना अनिवार्य है और विधायी गतिरोध की स्थिति में साधारण विधेयकों की भांति अनुच्छेद 108 के तहत संयुक्त बैठक (Joint Sitting) बुलाने का कोई संवैधानिक प्रावधान नहीं है। कथन III भी सत्य है; 24वें संशोधन 1971 के बाद राष्ट्रपति संविधान संशोधन विधेयक पर अपनी सहमति देने हेतु बाध्य हैं।

**प्रश्न:76** अनुच्छेद 20 के अंतर्गत प्रदत्त 'कार्योत्तर विधियों से संरक्षण' (Ex-Post Facto Laws) के...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** अनुच्छेद 20(1) के तहत कार्योत्तर विधियों से संरक्षण प्राप्त है, जिसके अनुसार किसी व्यक्ति को केवल उसी कृत्य के लिए दोषी ठहराया जा सकता है जो अपराध के समय लागू विधि के तहत निषिद्ध था, अतः कथन पूरी तरह सत्य है। कारण भी न्यायशास्त्र का एक स्थापित विधिक सत्य है कि यह संरक्षण केवल दंडात्मक आपराधिक कानूनों (Criminal Laws) तक ही सीमित है; राज्य दीवानी कानूनों (Civil Laws) या कर कानूनों (Tax Laws) को पिछली तारीख (Retrospective Effect) से लागू करने हेतु पूरी तरह स्वतंत्र है, जैसा कि भूतपक्षी करों के विन्यास में देखा जाता है। परंतु यह स्वतंत्र कानूनी श्रेणियों का तथ्य है, जो कथन की कोई प्रत्यक्ष तार्किक व्याख्या (दोनों स्वतंत्र रूप से सत्य तथ्य हैं) प्रस्तुत नहीं करता है।

**प्रश्न:77** केशवानंद भारती बनाम केरल राज्य वाद (1973) के ऐतिहासिक निर्णय तथा 'मूल ढांचे के सिद्धांत'...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** केशवानंद भारती वाद (1973) ने संसद की संशोधनकारी शक्ति को सीमित किया। निष्कर्ष I सर्वथा असत्य है क्योंकि मूल ढांचे के सिद्धांत ने संसद की संशोधन शक्ति को समाप्त नहीं किया, बल्कि उसे केवल विनियामक सीमाओं में बांधा; संसद आज भी मूल ढांचे को अक्षुण्ण रखते हुए संविधान के किसी भी हिस्से (मौलिक अधिकारों सहित) में संशोधन करने हेतु पूरी तरह स्वतंत्र है, जिससे संविधान एक जीवंत विलेख बना हुआ है। निष्कर्ष II पूरी तरह सत्य है; संसद प्रस्तावना और संविधान के उन मूलभूत दार्शनिक स्तंभों (जैसे पंथनिरपेक्षता, विधि का शासन, स्वतंत्र चुनाव, न्यायिक समीक्षा) को विधायी संशोधनों द्वारा विखंडित नहीं कर सकती जिन्हें न्यायालय ने मूल ढांचे का अंग घोषित किया है।

**प्रश्न:78** मौलिक अधिकारों के अंतर्गत 'धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार' की विभिन्न आंतरिक विनियामक कड़ियों...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन धार्मिक स्वतंत्रता के विनिर्दिष्ट प्रावधानों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: अंतःकरण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार करने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता अनुच्छेद 25 की व्यक्तिगत धार्मिक मेखला से संबद्ध है (a-4)। धार्मिक संप्रदायों को अपने धार्मिक मामलों के प्रबंधन तथा चल-अचल संपत्ति के अर्जन का सामूहिक अधिकार अनुच्छेद 26 के सामूहिक संस्तर का हिस्सा है (b-1)। किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि हेतु करों (Taxes) के भुगतान से मुक्ति की विनियामक स्वतंत्रता अनुच्छेद 27 के राजकोषीय पंथनिरपेक्ष आयाम को पुष्ट करती है (c-2)। अंततः, राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षण संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा पर पूर्ण प्रतिबंध अनुच्छेद 28 का शैक्षणिक विन्यास है (d-3)।

**प्रश्न:79** राज्य के नीति निदेशक तत्वों (भाग IV) के अंतर्गत सन्निहित विभिन्न लोक-कल्याणकारी प्रावधानों के...

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** विकल्प D असंगत होने के कारण सही उत्तर है। अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा की अभिवृद्धि करने, राष्ट्रों के मध्य न्यायसंगत संबंधों को बनाए रखने तथा अंतरराष्ट्रीय विवादों को मध्यस्थता द्वारा निपटाने के उदार बौद्धिक सिद्धांतों को **अनुच्छेद 51** के अंतर्गत संहिताबद्ध किया गया है, न कि अनुच्छेद 50 के अंतर्गत। अनुच्छेद 50 का विनियामक उद्देश्य राज्य की लोक सेवाओं में कार्यपालिका का न्यायपालिका से विधिक रूप से पृथक्करण (Separation of Judiciary from Executive) सुनिश्चित करना है। अन्य सभी विकल्प (अनुच्छेद 38 का त्रिविध न्याय, अनुच्छेद 39(d) का समान कार्य हेतु समान वेतन तथा अनुच्छेद 48-A का पर्यावरण संरक्षण) विधिक रूप से पूरी तरह सत्य हैं।

**प्रश्न:80** भारतीय नागरिक चेतना पारिस्थितिकी में समाहित 'मौलिक कर्तव्यों' (Fundamental Duties) की...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** यद्यपि मौलिक कर्तव्य स्वतः प्रवर्तनीय नहीं हैं और उनके उल्लंघन पर सीधे रिट जारी नहीं हो सकती, फिर भी भारत की संसद उपयुक्त विधायी अधिनियम (जैसे राष्ट्र गौरव अपमान निवारण अधिनियम 1971, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972) विनिर्मित करके उनके क्रियान्वयन हेतु कड़े दंडात्मक और विनियामक अवरोध स्थापित करने की पूर्ण संप्रभु विधायी शक्ति रखती है, अतः विकल्प C पूरी तरह सत्य है। विकल्प A असत्य है क्योंकि मौलिक कर्तव्य गैर-वादयोग्य (Non-justiciable) हैं। विकल्प B असत्य है क्योंकि इन्हें 42वें संशोधन (1976) द्वारा जोड़ा गया था, ये मूल संविधान में नहीं थे। विकल्प D असत्य है क्योंकि वर्तमान में कुल 11 मौलिक कर्तव्य विन्यासित हैं।

**प्रश्न:81** 'मूल ढांचे' (Basic Structure) के सिद्धांत के विवर्तनिक विन्यास...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** गोलकनाथ वाद (1967) में न्यायालय ने मौलिक अधिकारों को अलंघनीय माना था। कथन II असत्य है क्योंकि मिन्वा मिल्स वाद (1980) में न्यायपालिका ने 42वें संशोधन द्वारा जोड़ी गई धाराओं को निरस्त करते हुए स्पष्ट किया था कि 'न्यायिक पुनरावलोकन' (Judicial Review) स्वयं संविधान के मूल ढांचे का अभिन्न हिस्सा है

और संसद इसे छीन नहीं सकती। वामन राव वाद (1981) ने स्पष्ट विधिक संस्तर प्रदान करते हुए केशवानंद भारती निर्णय की तिथि (24 अप्रैल 1973) को इसकी कट-ऑफ रेखा के रूप में स्थापित किया था।

**प्रश्न:82** भारतीय संघीय ढांचे के अंतर्गत केंद्र-राज्य विधिक और प्रशासनिक संबंधों...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** अनुच्छेद 365 केंद्र के विधिक निर्देशों की अवहेलना की स्थिति में राष्ट्रपति शासन लगाने का मार्ग प्रशस्त करता है, अतः कथन सत्य है। कारण सर्वथा असत्य है क्योंकि अनुच्छेद 256 केंद्र को केवल 'संसदीय अधिनियमों (संसद द्वारा निर्मित कानूनों)' के अनुपालन को सुनिश्चित करने की सीमा तक ही राज्यों को प्रशासनिक निर्देश देने का विनियामक अधिकार सौंपता है। यह केंद्र को राज्य सूची के विषयों पर एकपक्षीय विवेकाधीन आदेश जारी करने की कोई संप्रभु शक्ति नहीं देता, जिससे प्रांतीय स्वायत्तता अक्षुण्ण रहती है।

**प्रश्न:83** अंतर-राज्यीय नदी जल विवादों के विनियामक नियमन और अनुच्छेद 262...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** अनुच्छेद 262 के तहत न्यायाधिकरण के गठन का प्रावधान है। निष्कर्ष। सर्वथा असत्य है क्योंकि अनुच्छेद 262(2) के अनुसार संसद न्यायालयों के क्षेत्राधिकार को वर्जित कर सकती है। अंतर-राज्यीय जल विवाद अधिनियम, 1956 के तहत न्यायाधिकरण के निर्णय के विरुद्ध सीधे अनुच्छेद 32 के तहत अपील नहीं की जा सकती (यद्यपि राज्य अनुच्छेद 136 के तहत विशेष अनुमति याचिका का सहारा लेते हैं)। निष्कर्ष II भी असत्य है क्योंकि नदी बोर्ड अधिनियम, 1956 का उद्देश्य नदी घाटियों के अंतःप्रांतीय नियमन और वैज्ञानिक विकास हेतु सलाहकारी तंत्र विनिर्मित करना है, न कि करों का वितरण।

**प्रश्न:84** राजकोषीय संघवाद तथा अंतर-राज्यीय संबंधों से जुड़े विभिन्न विनियामक...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन संघीय और अंतर-प्रांतीय विन्यासों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: वस्तु एवं सेवा कर (GST) परिषद का वैधानिक विन्यास 101वें संशोधन द्वारा जोड़े गए अनुच्छेद 279A से गतित है (a-3)। संसाधनों के पुनर्वितरण हेतु उत्तरदायी वित्त आयोग अनुच्छेद 280 के तहत स्थापित संवैधानिक संस्था है (b-1)। भाषाई तनावों के शमन हेतु निर्मित क्षेत्रीय परिषदें राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के तहत विनिर्मित वैधानिक निकाय हैं (c-4)। अंततः, केंद्र-राज्य समन्वय स्थापित करने वाली अंतर-राज्यीय परिषद अनुच्छेद 263 के तहत गठित होती है (d-2)।

**प्रश्न:85** आपातकालीन प्रावधानों (अनुच्छेद 352-360) के संघीय ढांचे पर पड़ने वाले...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** विकल्प B असंगत होने के कारण सही उत्तर है। 44वें संविधान संशोधन अधिनियम (1978) द्वारा यह अभेद्य विधिक सुरक्षा कवच विस्थापित किया गया है कि राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352) के दौरान भी राष्ट्रपति अनुच्छेद 359 के तहत आदेश जारी करके **अनुच्छेद 20 (दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण) और अनुच्छेद 21 (प्राण और दैहिक स्वतंत्रता)** के प्रवर्तन हेतु न्यायालय जाने के नागरिक अधिकार को किसी भी परिस्थिति में निलंबित नहीं कर सकते हैं। अन्य सभी विकल्प विधिक रूप से पूरी तरह सत्य हैं।

**प्रश्न:86** "101वें संविधान संशोधन अधिनियम द्वारा स्थापित GST परिषद अप्रत्यक्ष..."

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** जीएसटी परिषद की लोकतांत्रिक निर्णय प्रक्रिया भारित बहुमत पर आश्रित है। परिषद में राज्यों के पास सामूहिक रूप से केवल दो-तिहाई (66.66%) मत मूल्य ही विन्यासित है। चूंकि किसी भी विनियामक प्रस्ताव को पारित करने हेतु उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के न्यूनतम 75% भारित बहुमत की अनिवार्य शर्त विनिर्दिष्ट है, अतः केंद्र सरकार (33.33% मत मूल्य धारक) की पूर्ण असहमति की स्थिति में सभी राज्य मिलकर भी स्वतंत्र रूप से कोई निर्णय पारित नहीं करा सकते। यह विन्यास सहकारी संघवाद को विधिक रूप से अनिवार्य बनाता है।

**प्रश्न:87** सातवीं अनुसूची के वित्तीय विन्यास और करों के आनुपातिक वितरण प्रतिरूप...

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** अनुच्छेद 268 के तहत आने वाले कर (जैसे स्टॉप शुल्क) केंद्र सरकार द्वारा अधिरोपित किए जाते हैं, परंतु उनका संग्रहण और उपभोग संबंधित राज्यों द्वारा अपनी सीमाओं के भीतर किया जाता है, अतः विकल्प A पूरी तरह सत्य है। विकल्प B असत्य है क्योंकि अंतर-राज्यीय व्यापार के कर (अनुच्छेद 269) केंद्र द्वारा लगाए और वसूले जाते हैं, फिर राज्यों को सौंपे जाते हैं। विकल्प C असत्य है क्योंकि कृषि आय पर कर राज्य सूची का अनन्य विषय है। विकल्प D असत्य है क्योंकि सीमा शुल्क पूरी तरह संघ सूची का विषय है, समवर्ती का नहीं।

**प्रश्न:88** 16वें वित्त आयोग के गठन, संदर्भ शर्तों (ToR) और वित्तीय हस्तांतरण...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** डॉ. अरविंद पनगढ़िया की अध्यक्षता में गठित 16वां वित्त आयोग अपनी रिपोर्ट 31 अक्टूबर 2025 तक प्रस्तुत करेगा, अतः कथन I सत्य है। आपदा प्रबंधन की वित्तीय समीक्षा का दायित्व सौंपे जाने के कारण कथन III भी सत्य है। कथन II सांख्यिकीय रूप से असत्य है क्योंकि केंद्रीय करों के लंबवत हस्तांतरण में राज्यों की हिस्सेदारी को 41% निर्धारित करने का कार्य 15वें वित्त आयोग (एन.के. सिंह) द्वारा किया गया था (जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन के कारण इसे 42% से घटाकर 41% किया गया था), न कि 45%।

**प्रश्न:89** राष्ट्रपति शासन (अनुच्छेद 356) की विधिक प्रासंगिकता और एस.आर. बोम्मई...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** एस.आर. बोम्मई वाद (1994) में न्यायालय ने ऐतिहासिक व्यवस्था दी कि अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति की संतुष्टि के विनियामक आधार न्यायिक समीक्षा के अधीन हैं, अतः कथन सत्य है। कारण सर्वथा असत्य है क्योंकि न्यायालय ने स्पष्ट निर्देश दिया था कि राष्ट्रपति शासन लागू होते ही विधानसभा को तुरंत भंग नहीं किया जाना चाहिए; उसे केवल तब तक निलंबित रखा जाना चाहिए जब तक कि संसद के दोनों सदन राष्ट्रपति की उद्घोषणा को अपनी विधिक स्वीकृति प्रदान न कर दें। यदि संसद इसे खारिज कर देती है, तो निलंबित विधानसभा स्वतः पुनर्जीवित हो जाएगी।

**प्रश्न:90** क्षेत्रीय परिषदों (Zonal Councils) के भौगोलिक विन्यास और उनके प्रशासनिक...

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** क्षेत्रीय परिषदों के संबंध में निष्कर्ष I पूरी तरह सत्य है; भारत के केंद्रीय गृह मंत्री सभी पांचों क्षेत्रीय परिषदों के साझा अध्यक्ष होते हैं। निष्कर्ष II सर्वथा असत्य है क्योंकि राज्य पुनर्गठन अधिनियम, 1956 के सांख्यिकीय और प्रादेशिक वर्गीकरण के नियमों के अनुसार **राजस्थान राज्य को 'उत्तरी क्षेत्रीय परिषद' (Northern Zonal Council)** के प्रशासनिक क्षेत्राधिकार के अंतर्गत विन्यासित किया गया है (जिसका मुख्यालय नई दिल्ली है)। मध्य क्षेत्रीय परिषद का मुख्यालय प्रयागराज है जिसमें उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे राज्य शामिल हैं।

**प्रश्न:91** अंतर-राज्यीय नदी जल विवादों के शमन हेतु गठित न्यायाधिकरणों को...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन नदी जल विवादों के पक्षकार राज्यों का सही कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: नर्मदा जल विवाद न्यायाधिकरण के अंतर्गत राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के वित्तीय और प्रादेशिक संस्तर शामिल हैं (a-2)। महादयी जल विवाद न्यायाधिकरण गोवा, कर्नाटक और महाराष्ट्र के नदी संस्तरों के गतिरोधों से संबद्ध है (b-1)। कृष्णा जल विवाद न्यायाधिकरण महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के मध्य विस्तृत है (c-4)। अंततः, कावेरी जल विवाद न्यायाधिकरण कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और पुडुचेरी संघ राज्यक्षेत्र के मध्य विन्यासित है (d-3)।

**प्रश्न:92** भारतीय संघीय ढांचे में केंद्र-राज्य संबंधों और प्रशासनिक गतिकी के...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** विकल्प B असंगत होने के कारण सही उत्तर है। वर्ष 1969 में तमिलनाडु की डीएमके सरकार द्वारा गठित डॉ. पी.वी. राजमन्नार समिति ने अत्यधिक प्रादेशिक स्वायत्तता की मांग करते हुए अवशिष्ट शक्तियों (Residuary Powers) को केंद्र के पास रखने का तीखा विरोध किया था और उन्हें **पूर्णतः राज्यों को हस्तांतरित करने** की वैधानिक वकालत की थी। अन्य सभी विकल्प (सरकारी आयोग की अंतिम विकल्प वाली

टिप्पणी, पुंछी आयोग का राज्यपालों हेतु निश्चित कार्यकाल का प्रस्ताव तथा प्रशासनिक सुधार आयोग की अंतर-राज्यीय परिषद संबंधी संस्तुति) विधिक रूप से पूरी तरह सत्य हैं।

**प्रश्न:93** "नीचे दिए गए राजकोषीय परिच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए..."

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** 15वें वित्त आयोग (एन.के. सिंह समिति) ने केंद्रीय करों के क्षैतिज वितरण (Horizontal Devolution) के नियमों को अधिक वैज्ञानिक बनाने हेतु जनसांख्यिकीय प्रदर्शन (Demographic Performance) के मानक को शामिल किया था, जिसे सांख्यिकीय रूप से **12.5 प्रतिशत भार** आवंटित किया गया है। यह मानक विशेष रूप से उन राज्यों (मुख्यतः दक्षिणी भारत के प्रांतों) को पुरस्कृत करने हेतु विन्यासित किया गया है जिन्होंने राष्ट्रीय जनसंख्या नीति के लक्ष्यों के अनुरूप अपनी प्रजनन दरों और जनसांख्यिकीय आयतन को नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त की है।

**प्रश्न:94** राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352) के दौरान केंद्र और राज्यों के विधायी...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान संसद को राज्य सूची के विषयों पर कानून बनाने की संप्रभु विधायी शक्ति प्राप्त हो जाती है। अनुच्छेद 251 के विन्यास के अनुसार, यदि संसद द्वारा निर्मित संकटकालीन कानून और राज्य विधानमंडल द्वारा बनाए गए कानून के मध्य कोई टकराव उत्पन्न होता है, तो संसद द्वारा निर्मित कानून को विधिक सर्वोच्चता प्राप्त होती है और प्रांतीय कानून उस सीमा तक दबा रहता है। विकल्प A असत्य है क्योंकि इसके लिए राज्यसभा के प्रस्ताव (अनुच्छेद 249) की आवश्यकता नहीं होती। विकल्प B असत्य है क्योंकि राज्य विधानसभाएं स्वतः भंग नहीं होतीं। विकल्प D असत्य है क्योंकि राष्ट्रपति को अध्यादेश जारी करने की शक्ति प्राप्त होती है।

**प्रश्न:95** मूल ढांचे के सिद्धांत (Basic Structure) के घटकों और उनसे संबद्ध ऐतिहासिक...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** कथन I और III पूरी तरह सत्य हैं। इंदिरा गांधी वाद (1975) में स्वतंत्र चुनाव को तथा बोम्मई वाद (1994) में संघवाद और धर्मनिरपेक्षता को मूल ढांचा माना गया था। कथन II सर्वथा असत्य है क्योंकि मिनर्वा मिल्स वाद (1980) में न्यायपालिका ने 42वें संशोधन द्वारा जोड़े गए खंडों को निरस्त करते हुए यह प्रतिपादित किया था कि 'संसद की सीमित संशोधन शक्ति' (Limited Amending Power) स्वयं संविधान का मूल ढांचा है। संसद अपनी इस सीमित शक्ति का प्रयोग करके खुद को 'असीमित संशोधन शक्ति' का स्वामी नहीं बना सकती, क्योंकि ऐसा करना मूल ढांचे का हास होगा।

**प्रश्न:96** अनुच्छेद 280 के तहत वित्त आयोग के संवैधानिक अधिदेश और उसकी...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** वित्त आयोग एक अर्ध-न्यायिक संवैधानिक निकाय है जिसके अध्यक्ष और चार अन्य सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है, अतः कथन पूरी तरह सत्य है। कारण सर्वथा असत्य है क्योंकि संविधान के विन्यास के अनुसार वित्त आयोग द्वारा प्रस्तुत की जाने वाली सिफारिशें केवल सलाहकारी (Advisory in nature) होती हैं। केंद्र सरकार इन सिफारिशों को मानने हेतु विधिक रूप से बाध्य नहीं होती है, हालांकि लोकतांत्रिक और राजकोषीय परंपराओं के अनुरूप सामान्यतः इन्हें स्वीकार कर लिया जाता है।

**प्रश्न:97** राजकोषीय संघवाद के अंतर्गत सहायता अनुदान (Grants-in-aid) के संवैधानिक...

**सही उत्तर: A**

**व्याख्या:** अनुच्छेद 275 के तहत दिए जाने वाले विधिक अनुदान (Statutory Grants) संसद द्वारा निर्धारित किए जाते हैं और भारत की संचित निधि पर भारित होते हैं, अतः निष्कर्ष I पूरी तरह सत्य है। निष्कर्ष II सर्वथा असत्य है क्योंकि अनुच्छेद 282 के तहत प्राप्त विवेकाधीन अनुदान (Discretionary Grants) देने का राजकोषीय अधिकार **केंद्र सरकार और राज्य सरकारों दोनों को** अपने-अपने स्तर पर स्वतंत्र रूप से प्राप्त है; राज्य भी किसी लोक कल्याणकारी या सार्वजनिक उद्देश्य के लिए अपनी संचित निधि से विवेकाधीन अनुदान जारी करने की वैधानिक विधायी शक्ति रखते हैं।

**प्रश्न:98** वस्तु एवं सेवा कर (GST) परिषद की विधिक कार्यप्रणाली और अप्रत्यक्ष करों...

**सही उत्तर: B**

**व्याख्या:** इन अप्रत्यक्ष कर विन्यासों का सही विधिक कूट मिलान इस प्रकार स्थिर होता है: अंतर-राज्यीय व्यापार के कर (IGST) का आवंटन अनुच्छेद 269A के विशिष्ट विधिक संस्तर के अधीन संचालित होता है (a-3)। प्राकृतिक आपदा के दौरान विशेष कर दरों का निर्धारण अनुच्छेद 279A के तहत परिषद की संप्रभु सिफारिशों का हिस्सा है (b-1)। परिषद की किसी भी बैठक के वैध संचालन हेतु कोरम (गणपूर्ति) कुल सदस्यों का न्यूनतम 50% सांख्यिकीय आयतन विनिर्दिष्ट है (c-2)। अतः, कर दरों का सामान्य निर्धारण और वस्तुओं को कर मुक्त करना जीएसटी परिषद के विनिर्दिष्ट विधिक प्रशासनिक कार्य हैं (d-4)।

**प्रश्न:99** राष्ट्रीय आपातकाल (अनुच्छेद 352) की उद्घोषणा और उसके संसदीय अनुमोदन...

**सही उत्तर: C**

**व्याख्या:** विकल्प C में बारीक विधायी और सांख्यिकीय समय सीमा की त्रुटि होने के कारण यह असंगत विन्यास है। 44वें संविधान संशोधन अधिनियम (1978) के प्रवर्तन के पश्चात, राष्ट्रीय आपातकाल को अनिश्चित काल तक विस्तारित रखने हेतु प्रत्येक **6 माह** (न कि 1 वर्ष) के अंतराल पर संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत से पुनः संकल्प पारित करना विधिक रूप से अनिवार्य विन्यासित किया गया है। अन्य सभी विकल्प (1 माह का प्रारंभिक अनुमोदन, राज्यसभा की निरंतरता तथा लोकसभा के साधारण बहुमत द्वारा आपातकाल की समाप्ति का संकल्प) पूरी तरह सत्य प्रतिरूप हैं।

**प्रश्न:100** केंद्र-राज्य वित्तीय संबंधों और आधुनिक राजकोषीय संघवाद की विनियामक...

**सही उत्तर: D**

**व्याख्या:** 15वें वित्त आयोग ने करों के क्षेत्रीय वितरण में राज्यों द्वारा किए गए जनसांख्यिकीय नियंत्रण के प्रयासों को पुरस्कृत करने हेतु 'जनसांख्यिकीय प्रदर्शन' (Demographic Performance) मानक को शामिल किया है, अतः विकल्प D पूरी तरह सत्य है। विकल्प A असत्य है क्योंकि उपकर (Cess) और अधिभार (Surcharge) विभाज्य पूल का हिस्सा नहीं होते, इनका उपभोग केंद्र अकेले करता है। विकल्प B असत्य है क्योंकि नीति आयोग के पास राज्यों को वैधानिक अनुदान आवंटित करने की कोई वित्तीय शक्ति नहीं है। विकल्प C असत्य है क्योंकि राज्यों के पास 2/3 मत मूल्य होने के बावजूद वे केंद्र (1/3 मत मूल्य धारक) की सहमति के बिना 75% भारित बहुमत का विनियामक मानदंड प्राप्त नहीं कर सकते।

wincompete